पाठ 8. मैं गांधी बन जाऊँ

कविता का उद्देश्य

प्रस्तुत कविता का उद्देश्य बच्चों में देश-प्रेम की भावना जाग्रत करना तथा माता-पिता की सेवा के लिए प्रेरित करना है। महात्मा गांधी ने देश की आज़ादी में अग्रणी भूमिका निभाई। उन्होंने हमें मानवीय मूल्यों की सीख दी। आज की युवा पीढ़ी उनके आदर्शों का पालन करते हुए अपने देश का नाम रोशन करे तथा आज्ञाकारी बने, यही इस कविता का मुख्य उद्देश्य है।

कविता का सारांश

बालक माँ से खादी की चादर देने को कहता है, जिसे पहनकर वह गांधी बनना चाहता है। सब मित्रों के साथ बैठकर वह रघुपति राघव गाना चाहता है। वह धोती पहनेगा और खादी की चादर ओढ़ेगा। वह गांधी जी की तरह कमर में घड़ी लटकाएगा और रोज़ सवेरे सैर करने जाएगा। बकरी का दूध पिएगा, अपने जूते खुद सिएगा। वह माँ की सेवा करने का प्रण करेगा। गांधी जी की तरह वह चरखा चलाएगा। इस प्रकार बालक माँ से खादी की चादर माँगकर गांधी बनना चाहता है।

अध्यापन संकेत

कविता वाचन से पूर्व **पहले पहल** में पूछे गए प्रश्नों पर बच्चों से चर्चा करें। बच्चों को समझाएँ कि महात्मा गांधी कौन थे? उनके महान कार्यों के बारे में संक्षेप में बताएँ। गांधी जी के आदर्शों पर प्रकाश डालें। बच्चों को उन आदर्शों को अपने जीवन में अपनाने के लिए प्रेरित करें। कविता की एक-एक पंक्ति का लय के साथ वाचन करें।

बच्चों से पूछिए और समझाइए–

- क्या वे गांधी जी जैसा बनना चाहते हैं?
- बच्चों को बताएँ कि गांधी जी अपनी कमर में घड़ी क्यों लटकाकर रखते थे?
- सुबह सैर करने के फायदे बताएँ।
- बच्चों से पूछें, क्या वे दूध पीते हैं? यदि 'हाँ' तो वे किसका दूध पीते हैं?
- क्या वे अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करते हैं?
- कविता के कठिन शब्दों के अर्थ समझाएँ।

डिजिटल (Digital) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।